करघा बनाम चरखा!

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ४२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १७ दिसम्बर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

मनुष्य और मशीन

[भारतीय विद्याभवनके पत्र 'भवन्स जर्नल' के २० नवम्बर, १९५५ के अंकमें छपे श्री नेहरूके भाषणके सारसे।]

आज दुनियाको अीश्वर और बड़ी मशीनमें रहे असुरके बीच संतुलन कायम करना है, मशीनके भीतर रहे दैवी गुणोंको बाहर निकालना है और अिसकी सावधानी रखनी है कि अुसके आसुरी गुण हम पर हावी न हो जायं। आज हम तेजीसे बदलनेवाले युगमें रहते हैं, अैसे युगमें रहते हैं जब मनुष्यके हाथमें अपार शक्ति है। हम मशीनसे दूर नहीं भाग सकते; वह हमारे लिअे अनिवार्य है, क्योंकि केवल मशीन ही आजकी समस्यायें हल कर सकती है। अगर हमें मशीन रखनी ही है तो शिल्पविज्ञानकी और दूसरी दृष्टियोंसे नअीसे नअी और अुत्तम मशीन रखना चाहिये।

लेकिन मशीन निश्चित रूपसे मनुष्योंके कल्याणके लिअे है। अगर कहीं मशीन मनुष्योंकी स्थिति सुधारनेके बदले अुन्हें दुःखी बनाये और मुसीबतोंमें फंसाये तो हम हर तरहसे नुकसानमें ही रहेंगे। अिसलिअे मशीन तभी बरदाश्त की जा सकती है जब अुसका संबंध मानवता, सहिष्णुता और करुणाके साथ जुड़ जाय। वर्ना मशीन युद्धके दिनोंकी तरह तबाही मचा देगी, जब मशीन या फौजी दिमाग — जो मशीन या अेक रास्ते चलनेवाले दिमागका दूसरा नाम है — का ही बोलबाला रहता है।

अधिक आगे बढ़े हुअे देश अपने लोगोंकी भोजन, वस्त्र, मकान वगैराकी प्राथमिक जरूरतें पूरी करनेके बाद दूसरी बातोंके बारेमें सोच रहे हैं, जब कि भारत तथा अेशिया और अफ्रीकाके दूसरे देशोंको अपने लोगोंकी प्राथमिक जरूरतें पूरी करनी हैं। अेशिया और अफ्रीकाके देशोंको आवश्यक तौर पर अपनी प्राथमिक जरूरतोंके बारेमें सोचना पड़ता है, जब कि युरोप और अमेरिकाके देशोंने अपने लोगोंकी ये जरूरतें पूरी कर दी हैं; यह हकीकत अेशिया और अफ्रीकाके लोगों तथा युरोप और अमेरिकाके लोगोंकी दृष्टिमें काफी बड़ा फर्क पैदा कर देती है।

हमें कुछ आदर्श और अुद्देश्य अपने सामने रखने चाहिये, परंतु अन्तमें तो हर चीजको अिसी कसौटी पर कसा जायगा कि अुसने देशके लोगोंकी प्राथमिक जरूरतें किस हद तक पूरी की हैं। अिस बारेमें मुझे कोअी शंका नहीं है कि भारत प्रगति करनेमें समर्थ होगा और अपनी जनताकी भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा और स्वास्थ्यकी प्राथमिक जरूरतें पूरी कर सकेगा। प्रत्येक नागरिककी ये जरूरतें पूरी होनी ही चाहिये।

(अंग्रेजीसे) **जवाहरलाल नेहरू**

अम्बर चरखा

गांधीजीके अनेक स्वप्नोंमें से अेक स्वप्न था खादीके जरिये देशमें आर्थिक क्रान्ति करनेका। खादीका या चरखेका विचार गांधीजीको स्वदेशी-धर्मके अुनके व्यापक सिद्धान्तमें से प्राप्त हुआ था। वे कहते थे कि यह सिद्धान्त सारे जगतके लिअे है। और अुनका यह निश्चित मत था कि अिस सिद्धान्त पर अमल किये बिना दुनियामें शांति कायम नहीं हो सकती।

अिसके खिलाफ बहुतसे लोग कहते थे कि मिलों और यंत्रोद्योगोंके अिस जमानेमें यह बात कैसे चलेगी? फिर भी अेक भाअीका यह कथन बिलकुल सत्य है कि गांधीजीने अिस विषयमें अुलटी गंगा बहा दी! अूपर बताये विचार रखनेवाले आज भी बहुत लोग हैं, फिर भी खादीका सिद्धान्त आजके जमानेमें भी सच्चा है और अुसका स्वीकार धीरे धीरे लेकिन निश्चित रूपमें होता ही जा रहा है।

खादीके विरुद्ध अेक मुख्य आपत्ति यह की जाती थी कि वह यंत्रोंके खिलाफ है। आज भी यही बात रटते रहनेवाले लोग देशमें मौजूद हैं। अिसके अुत्तरमें गांधीजीने कअी बार कहा था कि मैं यंत्रोंका विरोधी नहीं हूं, लेकिन अुनका अंधा पुजारी भी नहीं हूं। मनुष्यके कल्याणमें अुनका अुपयोग होना चाहिये। अिसलिअे यंत्रोंकी मर्यादा समझनेकी जरूरत है; अुनके त्यागका तो प्रश्न ही नहीं अुठता।

अिस कारणसे ठेठ १९२५-२६ में अुन्होंने चरखा-संघकी ओरसे अेक अच्छे चरखेकी शोधके लिअे अेक लाख रुपयेका अिनाम जाहिर किया था। अुस समय तो यह अिनाम जीतनेवाला कोअी नहीं निकला, हालांकि कअी प्रतिस्पर्धी आये थे जरूर। लेकिन किसीका काम अैसा नहीं मालूम हुआ, जो कसौटी पर पूरी तरह खरा अुतर सके। यह सादी घटना भी बताती है कि खादीका आर्थिक तत्त्वज्ञान यंत्रोंके विरुद्ध नहीं है, बल्कि यंत्रको मानव-सेवाका साधन मानकर अुसके लिअे अुचित यंत्र तैयार करनेमें अुसकी श्रद्धा है। यह दुःखकी बात है कि भारतके किसी वैज्ञानिकने अिस दृष्टिसे चरखे, पींजन आदिकी खोजमें शायद ही कभी मदद की। स्वराज्यकी लड़ाअीकी तरह गांधीजीने यह काम भी लगभग अपढ़ कहे जानेवाले लोगोंसे ही कराया और खादीके संदेशको आगे और अधिक आगे बढ़ाया।

अिसलिअे गांधीजीको अच्छा चरखा खोजनेके कामकी हमेशा चिन्ता रहती थी; १९४६ में अंतिम बार सेवाग्राम छोड़ते समय भी अुन्होंने कहा था: "हम अैसा चरखा क्यों नहीं निकाल सकते, जिस पर लोग खुशीसे कातें, अुन्हें कातनेका अुपदेश न देना पड़े? हमारे दिमाग जड़ हो गये हैं, वर्ना अैसा चरखा बनाना कठिन नहीं होना चाहिये।"

www.vinoba.in

सौभाग्यसे आज अैसा चरखा मिलनेकी आशा बंध रही है। अिसका श्रेय तामिलनाड़के अेक किसान युवकको है। लगभग पांच बरस पहले अुस युवकने चरखेके अैसे नमूनेकी शोध शुरू की थी, जिस पर मिलकी पद्धतिसे काता जा सके। और अपनी सूझ-बूझके अनुसार अेक चरखा तैयार करके अुसने चरखा-संघको भेंट दिया। संघने अुस पर अपने प्रयोग शुरू किये और अुसमें सुधार करके काम दे सकने लायक अेक नमूना तैयार किया। अुस युवकके नाम पर अिस चरखेको 'अंबर चरखा' कहा जाता है। अुसके द्वारा भारतकी औद्योगिक पुनर्रचनामें क्रान्तिकारी आरंभ करनेकी संभावना दिखाअी देती है।

यह चरखा चार तकुओंका है। अैसा अनुमान है कि ४०–५० रुपयेमें वह बेचा जा सकेगा। अिसके सिवा, लोढ़ने और पूनी बनानेका औजार भी अुसके साथ तैयार किया गया है। लगता है कि यह पूरा सेट लगभग सौ रुपयेके भीतर दिया जा सकेगा। यदि अुसे बड़े पैमाने पर तैयार करनेकी आवश्यक सुविधायें मिल जायं और यंत्रशास्त्री तथा सरकार अिस काममें मदद करें तो निश्चित है कि अिससे भी कम कीमतमें वह मिल सकेगा।

अिस चरखे पर प्रतिघंटे औसतन् दो गुंडी सूत अुतरता है। सूतकी समानता और मजबूती बहुत अच्छी होती है और अुससे बननेवाली खादी बहुत मजबूत और टिकाअू होती है। अैसी धारणा है कि अिस चरखेसे वस्त्र-स्वावलंबन सिद्ध करनेमें तथा बेकारी दूर करनेमें बड़ी मदद मिलेगी। अिसलिअे अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्डने दूसरी पंचवर्षीय योजनामें अुसे स्थान दिया है और अिस समय अुसकी चर्चा अुच्च कक्षा पर ठेठ दिल्लीमें चल रही है।

अिस चर्चाके बहुत गंभीर परिणाम आयेंगे। वह यदि सफल हो जाय तो खादी द्वारा क्रान्तिका मंत्र अपनी शक्ति प्रकट करेगा। अतः अुसके विरोधी बल भी सुसज्ज हो गये हैं, जिनमें मालूम होता है केन्द्रीय सरकारके अुद्योग-मंत्री श्री टी० टी० कृष्णमाचारी तथा मिल-अुद्योगमें हित रखनेवाले लोग भी हैं। श्री कृष्णमाचारी किस हद तक जाकर और विवेक छोड़कर बात करते हैं, यह अिसी परसे देखा जा सकता है कि श्री वैकुण्ठभाअी महेता जैसे सौम्य और शान्त व्यक्तिको भी अुनके खिलाफ सार्वजनिक रूपमें लिखना पड़ा है। (देखिये, ता० ३–१२–'५५ के 'हरिजनसेवक' में पृष्ठ ३१३ पर छपा लेख।) अैसा करके श्री कृष्णमाचारीने कमसे कम अपने पदकी शोभा तो नहीं ही बढ़ाअी। और भारतके औद्योगिक पुनरुत्थान पर अुन्होंने जाने-अनजाने या अपनी सत्ताके मद या मोहमें प्रहार करनेका पाप किया है। वे यदि केन्द्रीय सरकारके प्रति जिम्मेदार हों तो किसीको अुनसे अिसके लिअे जवाब तलब करना चाहिये।

अम्बर चरखेके पीछे क्या छिपा है, यह समझानेके लिअे अेक छोटीसी मिसाल देना काफी होगा। अूपर मैंने १९२६ में नये चरखेके लिअे गांधीजी द्वारा घोषित अेक लाखके अिनामकी बात कही है। अुस अिनामकी होड़के परीक्षकोंमें गांधीजीने अहमदाबादके अेक प्रसिद्ध मिल-मालिकको भी रखा था। अच्छेसे अच्छा नमूना भी अुनकी अपेक्षा तक नहीं पहुंच पाया था अिसलिअे अुस पर अिनाम तो नहीं मिला था। परंतु अुसे देखकर अुस मिल-मालिकने गांधीजीसे कहा था कि अैसा चरखा यदि बन जाय तो मिल-अुद्योगका अन्त आ जायगा और कपड़ेका अुद्योग विकेन्द्रित हो जायगा।

बेकारी दूर करनेके अुपायकी शोध करते करते गांधीजीको चरखा मिला था। अब अम्बर चरखेने वस्त्र-अुद्योगको ग्रामोद्योगके रूपमें विकेन्द्रित करनेका मार्ग बताया है और अिस तरह अुस मिल-मालिककी बातको अनसोचे ढंगसे ताजा कर दिया है। अिसी कारणसे अुसका विरोध खड़ा हुआ है। केन्द्रीय सरकारका अुद्योग-विभाग भी अुसमें शरीक है, यह मैं मानता हूं कि सरकारकी नहीं परंतु अुसके अेक मंत्रीकी वैयक्तिक नीति ही होगी। परंतु यदि सरकारकी संयुक्त जिम्मेदारी हो तो अुसका अेक मंत्री अपनी नीति नहीं चला सकता। सरकारी तंत्र अैसी बातोंमें अगर व्यवस्थित और अनुशासनबद्ध न हो तो देशके भविष्य पर अुसका बुरा असर हुअे बिना नहीं रहेगा। अंबर चरखेकी शक्तिको बढ़ानेके बदले अुसे रोकनेके प्रयत्न देशके सच्चे आर्थिक विकासका द्रोह माने जायंगे, क्योंकि अम्बर चरखेके मार्गसे भारतकी गरीब प्रजाकी आर्थिक अुन्नति या स्वतंत्रताकी कुंजी हासिल हो सकती है।

५–१२–'५५ **मगनभाई देसाई**

(गुजरातीसे)

अम्बर चरखेका अर्थशास्त्र

[१ दिसम्बर, १९५५ के 'अे० आअी० सी० सी० अिकॉनामिक रिव्यू' से अुद्धृत किये गये नीचेके लेखसे पाठकोंको यह कल्पना आयेगी कि अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्डने दूसरी पंचवर्षीय योजनामें क्या क्या करनेका सुझाव रखा है। योजना-कमीशनकी कर्वे-कमेटीने अपनी रिपोर्टमें बोर्डके अिस सुझावको सामान्य रूपमें स्वीकार किया है।]

अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड दूसरी पंचवर्षीय योजनाके दरमियान २५ लाख अम्बर चरखे दाखिल करने और अपने १५० करोड़ गज कपड़ा-अुत्पादनके लिअे आवश्यक ४१ करोड़ २० लाख पौंड सूत तैयार करनेका विचार रखता है। पांच वर्षके समयमें हर वर्ष होनेवाले सूत और कपड़ेके अुत्पादनके तफसीलवार आंकड़े नीचेके कोष्ठकमें बताये गये हैं:

तफसील	अुत्पादनका कार्यक्रम				
	पहला वर्ष	दूसरा वर्ष	तीसरा वर्ष	चौथा वर्ष	पांचवां वर्ष
	१९५६-५७	१९५७-५८	१९५८-५९	१९५९-६०	१९६०-६१
१. जरूरी चरखा सेट* (लाखमें)	१.२४	३.७८	८.७२	१६.२८	२५
२. सूतका अुत्पादन (लाख पौंडमें)	२०६	६१९	१,४४४	२,६८२	४,१२५
३. कपड़ा-अुत्पादन — अम्बर चरखेका कपड़ा (लाख गजमें)	७५०	२,२५०	५,२५०	९,७५०	१५,०००

खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड आशा करता है कि २५ लाख अम्बर चरखे दाखिल करनेसे देशके ५० लाख कतवैयोंको तथा ८.४६ लाख बुनकरों और अुनके ४.२५ लाख सहायकोंको कुछ समयका और पूरे समयका काम मिलेगा; अिसके सिवा ७२,००० सुतारों और अुनके सहायकोंको तथा लगभग २०,००० दूसरे लोगोंको व्यवस्था और संगठन तंत्रमें पूरे समयका काम मिलेगा।

अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा प्रस्तुत की गअी खादीकी दूसरी पंचवर्षीय योजना पर अमल करनेसे सारी प्रक्रियाओंमें ५४ लाख आदमियोंको काम मिलेगा — यहां अेक दिनके पूरे कामका समय ८ घंटे माना गया है।

दूसरी पंचवर्षीय योजनाके लिअे पेश किये गये खादी-ग्रामोद्योग बोर्डके कार्यक्रम पर अमल करनेसे कतवैयों और कत्तिनोंकी औसत कमाअी मामूली चरखे पर प्रतिदिन करीब ६ आनेसे बढ़कर अम्बर चरखे पर लगभग १२ आने तक पहुंच जायगी। यानी १०० फी सदी बढ़ जायगी। अम्बर चरखे पर रोज औसतन् २० नंबरका १६ गुंडी सूत तैयार हो सकता है, जब कि मामूली चरखे पर

* चरखा सेटमें अम्बर चरखा तथा लोढ़ने और पींजनेका औजार शामिल है।

www.vinoba.in

औसतन् १६ नम्बरका ३ गुंडी सूत ही तैयार होता है। अम्बर चरखेका सूत तुलनामें अधिक समान और अधिक मजबूत होता है। अिसके फलस्वरूप मामूली चरखेके सूतसे अम्बर चरखेका सूत बुननेमें कम कठिनाअियां होती हैं। प्रति घंटेका अुत्पादन काफी ज्यादा होनेके सिवा अम्बर चरखेका सूत जहां कहीं भी आजमाया गया वहां अपेक्षाकृत अधिक अच्छा साबित हुआ है, जिसकी वजहसे हाथ-करघे पर काम करनेवाले बुनकरों द्वारा वह अधिक स्वीकार किया जायगा। अिसलिअे यह स्वाभाविक है कि हाथ-करघेके बुनकर सालमें थोड़े या ज्यादा समयके लिअे बेकार रहनेके बजाय अम्बर चरखेका सूत काममें लेना ज्यादा पसन्द करेंगे।

खादीका कार्यक्रम देशके हाथ-करघा बुनकरोंकी आयमें वृद्धि करके अुनकी आर्थिक स्थितिमें सुधार करेगा, जो बहुत महत्त्वकी बात होगी। टेक्सटाअिल अिन्क्वायरी कमेटीने हाथ-करघा बुनकरकी मौजूदा औसत आमदनी प्रतिदिन रु० १–२–० मानी है। खादी बोर्डका कार्यक्रम हर हाथ-करघा बुनकरको प्रतिदिन कमसे कम रु० १–८–० कमाने लायक बना देगा; और जिसकी कार्यक्षमता या कुशलता औसत बुनकरसे अधिक होगी, अुसकी आमदनी प्रतिदिन रु० १–८–० से रु० ३–०–० के बीच रहेगी।

अिसलिअे देशकी आबादीके विभिन्न वर्गोंको कामधंधा देने और अुनकी आर्थिक दशा सुधारनेकी आवश्यकताकी दृष्टिसे या देशके बुनकरों, अुनके सहायकों तथा बहुत बड़ी संख्यामें कत्तिनोंके जीवन-मानके योजनाबद्ध सुधारकी दृष्टिसे देखते हुअे अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्डके अिस कार्यक्रमका बड़ेसे बड़ा आर्थिक और सामाजिक महत्त्व है।

(अंग्रेजीसे)

भाषाओंमें मां-मौसीका न्याय

[गु० सा० परिषद्के ता० २७–२८ अक्तूबर, १९५५ को हुअे १९ वें अधिवेशनके शिक्षा और संस्कार विभागके अध्यक्षके नाते दिये गये भाषणसे।]

दो हफ्ते पहले अहमदाबादमें भाषा-कमीशन आया था। अुसके सामने साक्षी देनेका मौका मिलने पर और अुसके साथ चर्चा करने पर कुछ सदस्योंका हिन्दी और अंग्रेजीका पक्षपात साफ मालूम हो जाता था। हिन्दी भाषाको कॉलेजोंमें शिक्षाका माध्यम बनानेकी आवश्यकता पर जोर दिया जाता था। मैं समझ नहीं पाता कि किस सिद्धान्तके आधार पर अैसा आग्रह रखा जाता है।

अिस बातसे कोअी अिनकार नहीं करता कि हिन्दी या अंग्रेजी दोनों भाषायें सीखनी चाहिये और अिससे आगे बढ़कर दुनियाके कुछ देशोंकी भाषायें भी हमें सीख लेनी चाहिये। अिसके सिवा, खास तौर पर अैसी भाषाओंका अभ्यास जरूरी है जो भलीभांति विकसित हैं और जिनका साहित्य विशाल और बहुलक्षी है। अैसी अेक-दो भाषायें हमारे नौजवानोंको सीखनी पड़ेंगी, हमें अुन्हें सिखानी ही पड़ेंगी। परंतु अितनेके लिअे अुन भाषाओंको माध्यमके तौर पर लादनेकी वृत्ति किसी भी कारणसे बरदाश्त नहीं की जा सकती।

हिन्दीको कॉलेजके माध्यमके रूपमें और अंग्रेजीको अुच्चतर शिक्षणके माध्यमके रूपमें जारी रखनेकी जो बातें फैलाअी जाती हैं वे कितनी खोखली और बेबुनियाद हैं, यह सब कोअी देख सकते हैं। स्वार्थके लिअे, अिनेगिने अेक फीसदीसे भी कम युवकोंको केन्द्रीय सरकारमें नौकरियां मिलनेके लिअे, देशका अुच्च कक्षाका कामकाज हिन्दीमें चले अिसके लिअे या विदेशोंके साथका व्यवहार अंग्रेजीमें चले अिसके लिअे और अुनमें भाग लेनेवाले अेक या डेढ़ फी सदी लोगोंके लिअे बाकीके ९८ या ९९ फीसदी लोगोंके शिक्षणको खतरेमें डालना न्याय नहीं है, आजके लोकशाहीके जमानेके अनुकूल नहीं है। परभाषाका माध्यम लादकर नअी पीढ़ीकी बुद्धिके विकासको रोकना ठीक नहीं।

हिन्दीके पक्षमें अेक दलील यह दी जाती है कि हिन्दी और गुजरातीका संबंध मौसी और मांके संबंध जैसा है। कोअी हिन्दीके रसिया तो 'मा मरे, पर मौसी जीये' की कहावत कहकर हिन्दीको माध्यमके रूपमें अपनानेका प्रचार करते हैं। अमुक व्यवहारके बारेमें यह कहावत भले सच हो, परंतु अेक बात कोअी भूल नहीं सकता कि मां आखिर मां है और मौसी मौसी ही है। मौसी कभी मां नहीं बन सकती। हिन्दीको माध्यमके रूपमें स्वीकार करनेसे बहुत बड़े भागके बालकोंकी बुद्धिका विकास निश्चित ही रुकेगा और जिस प्रकार अंग्रेजी माध्यम द्वारा मिली हुअी शिक्षा केवल अूंचे स्तरके अमुक लोगों तक ही मर्यादित रही, अुसी प्रकार हिन्दी द्वारा मिलनेवाली शिक्षाका भी होगा। केवल कुछ फीसदीका ही फर्क पड़ेगा। यहां मुझे मेकॉलेकी चर्चाके समय हॉरेस विल्सन द्वारा अुपयोग किया हुआ अेक वाक्य याद आता है, जो चेतावनीके रूपमें था और जिसे काफी प्रसिद्धि नहीं मिल पाअी थी। अुन्होंने कहा था: "Knowledge garbed into a foreign language will be the property of only the few who have leisure and opportunity to achieve it." (विदेशी भाषाका बाना पहना हुआ ज्ञान कुछ अिनेगिने लोगोंकी जायदाद बन जाता है, जिनके पास अुसे प्राप्त करनेका अवकाश और अवसर है।) अिस वाक्यमें रहा सत्य आज हम देखते हैं और अिसमें जरा भी शंका नहीं कि अिसका सुधरा हुआ संस्करण हमें हिन्दी माध्यमके फलस्वरूप देखनेको मिलेगा।

विदेशोंमें विद्याभ्यास करनेके लिअे जानेवाले, अुच्चतर शिक्षा लेनेवाले और अेक युनिवर्सिटीसे दूसरीमें जानेवाले विद्यार्थियोंका क्या होगा, अैसा कहकर हिन्दी और अंग्रेजीकी जो हिमायत की जाती है, वह भी अितनी ही खोखली है। मातृभाषाको माध्यमके तौर पर स्वीकार करनेवाली युनिवर्सिटियोंने हिन्दी और अंग्रेजी भाषाके अभ्यासकी — यथासंभव ठोस अभ्यासकी — व्यवस्था अपने अभ्यासक्रममें की ही है। यदि सात वर्षके अंग्रेजी अभ्यासके बाद अेक बालक कॉलेजमें अंग्रेजी माध्यम द्वारा अपना काम चला सका तो सात बल्कि आठ वर्षका बड़ी अुम्रमें किया हुआ अंग्रेजीका अध्ययन अुसे अवश्य अंग्रेजी द्वारा अुच्चतर शिक्षण लेने योग्य बनायेगा, और अिसी तरह सात वर्षका मौसी भाषाका अध्ययन किसी भी बालकको आवश्यकता होने पर हिन्दी माध्यमवाले कॉलेजमें पढ़नेके लायक बना देगा। परंतु संयोगवश अैसे कुछ मातृहीन बन जानेवाले बालकोंके खातिर देशके सब बालकोंकी मां मार डालनेका सिद्धान्त स्वीकार करनेके लिअे कोअी भी शिक्षित युवक आज तैयार नहीं होगा।

भाषा-कमीशनके साथ हुअी चर्चामें पारिभाषिक शब्दोंके प्रश्न पर भी विचार किया गया था। पारिभाषिक शब्द तैयार करनेका काम हमारी परिषद्को अुठाना चाहिये। अिसमें पूर्णताका खयाल न रखते हुअे तुरन्त तो अेक कामचलाअू सर्वमान्य कोश ही जल्दी तैयार किया जाना चाहिये। आगे जैसे-जैसे आवश्यकता मालूम हो, वैसे-वैसे अुसमें सुधार और परिवर्धन करनेकी गुंजाअिश रहनी चाहिये। अिसके लिये अेक केन्द्रीय कमेटीकी जरूरत पड़ सकती है, दूसरी भाषाओंमें काममें लिये जा रहे शब्द देखने पड़ सकते हैं और अिस सारे कार्यकी व्यवस्था करनी पड़ सकती है, लेकिन फिर भी हमारी परिषद्को अिस कार्यमें पहल करना चाहिये। अिस संबंधमें पहले कुछ प्रयत्न हुअे हैं, जो सफल रहे हैं। अुनके आधार पर हमें यह कार्य आगे बढ़ाना चाहिये। आज तो हम यह कहकर कि यह कार्य युनिवर्सिटीका है किसी भी प्रकारकी पहल अिस दिशामें नहीं करना चाहते। लेकिन परावलंबी वृत्ति धारण करके बैठे रहनेसे हमारा काम नहीं चलेगा।

(गुजरातीसे) लालभाअी र० देसाअी

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१७ दिसम्बर १९५५

करघा बनाम चरखा!

लेखका शीर्षक शायद पाठकोंको विचित्र लग सकता है। करघेका चरखेसे विरोध कैसा! — अैसा अुन्हें लगेगा। परन्तु भारतका जो नया आर्थिक अितिहास अिस वक्त रचा जा रहा है, अुसमें कुछ लोगोंकी समझ अैसी मालूम होती है मानो अिन दोनोंके बीच कोअी विरोध हो। यह विचित्र बात है। यह विचित्रता बतानेके लिअे ही अैसा शीर्षक देकर मैं यह लेख लिख रहा हूं।

पाठकोंको याद होगा कि दो-अेक साल पहले आजके नायब अुद्योग-मंत्री श्री कानूनगोकी अध्यक्षतामें कपड़ा-अुद्योगकी जांच करनेके लिअे केन्द्रीय सरकारने अेक समिति नियुक्त की थी, जिसकी रिपोर्टकी बहुत तारीफ हुअी थी। अिस पत्रमें मैंने अुस विषयमें लिखा था, जो पाठकोंको याद होगा। (देखिये, हरिजनसेवक, १६-१०-'५४)

कानूनगो-समितिकी रिपोर्टमें मिल, यंत्र-करघा, झटका-करघा तथा हाथसे ढरकी फेंक कर कपड़ा बुननेके सादे खड्डा-करघाका भी विचार किया गया था। अुसमें ध्यान देनेकी बात यह थी कि रिपोर्टमें बताये गये ये सारे करघे मिलका सूत काममें लेनेवाले थे। अर्थात् हाथ-सूत देनेवाले चरखे और अुस सूतसे बननेवाली खादीकी गिनती अुसमें नहीं की गअी थी, हालांकि अेक आपत्ति-जनक वाक्य अुसमें लिखा गया था जिसमें कहा गया था कि यहां हमने खादीका विचार नहीं किया है; अुसकी अलगसे स्वतंत्र जांच की जानी चाहिये। परन्तु अैसी कोअी स्वतंत्र जांच अिस विभागकी तरफसे की नहीं गअी, और कानूनगो-समितिने अपनी जांचमें या योजनामें खादीको कोअी स्थान दिया भी नहीं था।

अुपरोक्त समितिकी अिस तरहकी रिपोर्टसे साफ मालूम हो गया था कि केन्द्रीय सरकारका अुद्योग-विभाग चरखे, अुसके सूत तथा अुसे बुननेवाले करघों और खादीको, अुसका बस चले तो, अेक ओर रखकर चलनेकी अिच्छा रखता था। अुद्योग-विभाग खादी जैसी चीजका नाम लेता है यह भी मजबूरीसे ही लेता होगा, क्योंकि गांधीजीकी पेश की हुअी खादीकी खुली अुपेक्षा या निन्दा करके आगे नहीं बढ़ा जा सकता। परन्तु अुस विभागके अध्यक्षको खादीका नाम लेना पसंद नहीं था, यह अब साफ दिखाअी देने लगा है। अितना स्पष्ट रुख बतानेके लिअे भी अुन्हें धन्यवाद दिया जाना चाहिये, यद्यपि अुस रुखकी सचाअी, बुद्धिमत्ता या समझके बारेमें अैसा नहीं कहा जा सकता।

केन्द्रीय सरकारके अुद्योग-विभागकी मरजी अैसी मालूम होती है कि कपड़ा-अुद्योगमें मिलोंके साथ और अुद्योग-आश्रयमें रखकर यंत्र-करघेका अुद्योग देशमें [illegible] अुद्योगपति [illegible]। अिस कारणसे वह आज चल रहे हाथ-करघे हैं; अैसे करघोंमें बदल डालनेका अिरादा रखता है। अिस अुद्देश्यके लिअे वह विकास-योजनाके पैसे काममें लेना चाहता है। और अपने हाथ-करघा बोर्डके जरिये वह अिस वक्त अैसी ही तजवीज कर रहा है।

अैसा करनेसे सादे करघे धीरे धीरे यंत्र-करघे बनते जायंगे और अुनके लिअे आवश्यक सूत मुहैया करनेके लिअे मिलोंमें तकुअे बढ़ाये जायंगे, अर्थात् नअी मिलें खड़ी की जायंगी। परन्तु अिस वक्त नअी मिलें खोलने पर जो प्रतिबन्ध लगे हुअे हैं, वे अुठा दिये जाने चाहिये। यह अुद्योग-विभागका दूसरा ध्येय मालूम होता है।

अुद्योग-विभागकी अैसी वृत्ति होनेसे यदि हाथ-सूत बुननेवाला जुलाहा मिल-सूत बुननेकी तरफ मुड़े तो अिसमें अुद्योग-विभागको प्रगति हुअी मालूम होती है और अिसे वह प्रोत्साहन देने योग्य मानता है।

अब सच पूछा जाय तो मिलके सूतकी देशमें अितनी बहुतायत नहीं है कि जुलाहोंका अधिकाधिक मात्रामें अुसे बुननेकी तरफ मुड़ना जरूरी हो। हकीकत तो यह है कि आज मिलका सूत बुननेवाले जितने करघे हैं अुनकी जरूरतका सूत भी मिलें नहीं दे पाती हैं। अिस कारणसे यह स्पष्ट हो जाता है कि हाथ-सूत भी यथासंभव ज्यादासे ज्यादा पैदा किया जाय और अिस तरह खादी-अुद्योगको आगे बढ़ाया जाय। सरकारके योजना-कमीशनने भी अिस बातका समर्थन किया है। यह विचित्र है कि अैसा करनेके बजाय सरकारका अुद्योग-विभाग मिलें खोलना पसन्द करता है, परन्तु यह नहीं चाहता कि देशमें चरखे चलें! अिस विभागके अध्यक्ष आज अम्बर चरखेके बारेमें जो रुख बता रहे हैं, अुससे यह बिलकुल स्पष्ट हो जाता है।

अिसमें हमें शंका नहीं करनी चाहिये कि अुनका यह रुख अुनकी प्रामाणिक मान्यताके कारण ही होगा। यंत्र और यंत्रोद्योगकी संस्कृतिको वे आदर्श मानते हैं। अुनके जैसी मान्यतावाले दूसरे भी अनेक लोग देशमें होंगे। अैसे लोगोंके आधार पर ही आज अुद्योगपति अपनी मनपसंद व्यवस्था कायम रखने और यथा-संभव आगे बढ़ाकर अुसे देशमें मजबूत बनानेकी ताकमें हैं। यह परिस्थिति आज अचानक नहीं पैदा हुअी है। जैसे-जैसे भारतकी आर्थिक विकास योजनायें आगे बढ़ती जाती हैं, वैसे-वैसे यह परि-स्थिति अधिक स्पष्ट होती जाती है। ब्रिटिश राज्यकालमें जिन अुद्योगोंका विकास हुआ वे आज आगे बढ़ना चाहते हैं और राज्यका आश्रय खोजते हैं। अितना ही नहीं, वे यह भी स्वीकार करा लेना चाहते हैं कि राष्ट्रकी नअी विकास-दृष्टिमें अुनका भी स्थान है। भारतके अुद्योग-मंत्री जैसे लोग, जो आज सत्ताके स्थान पर होनेके कारण प्रचलित विचारसरणी पर न केवल अपना असर और प्रभाव ही डाल सकते हैं, बल्कि विरोधी विचार रखनेवाले खादी-दृष्टिके वर्गोंकी हंसी अुड़ानेकी हद तक भी पहुंच जाते हैं, अिस दिशामें आज जोर लगा रहे हैं। अुन्हें चरखा अर्थात् देशकी बेकारी दूर करनेका जबरदस्त कार्यक्रम पसंद नहीं आता। वह दिशा ही अुन्हें अुलटी मालूम होती है; अितना ही नहीं अुसमें अुन्हें अपने प्रिय मिल-अुद्योगोंके लिअे भय मालूम होता है। और यह तो मानसशास्त्रसे सिद्ध हो चुका है कि भयकी दशामें मनुष्यके विचारों पर अेक प्रकारका आवरण छा जाता है या अुसे मोह हो जाता है अथवा अुसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। हो सकता है अैसा परिणाम भी आया हो। यह अिस वर्गके कुछ वाचाल लोगोंके वचनों परसे साबित किया जा सकता है।

अिस वर्गके लोगोंकी विचारसरणीमें असल कमजोरी यह है कि यंत्रोद्योगों द्वारा अर्थ-व्यवस्था करनेके अुनके तरीकेसे देशकी भयंकर बेकारी दूर नहीं हो सकती। बल्कि जैसे-जैसे यंत्रोद्योग बढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे बेकारी बढ़ती जाती है, जिसे कर्वे-समितिने 'यंत्रोद्योगोंसे पैदा होनेवाली बेकारी' कहा है।

अिस तरह बेकारी बढ़ानेवाली नीति तो देशको कैसे पुसा सकती है? बेकारी-निवारण आज हमारे देशका और सरकारका मुख्य कार्य है। अिसे स्वीकार करके सरकार अगर न चले तो वह खुद भी ज्यादा समय तक टिक नहीं सकती, अैसी स्थिति आज है। अिसी कारणसे नअी विकास-योजनामें खादी और ग्रामोद्योगोंको अनिवार्य अंगके रूपमें स्थान प्राप्त हुआ है।

अुद्योग-मंत्री श्री कृष्णमाचारी स्पष्ट शब्दोंमें तो अिस नीतिका विरोध कैसे कर सकते हैं? परन्तु अितना निश्चित है कि

www.vinoba.in

अुन्हें यह नीति पसंद नहीं है। फिर भी आशा रखें कि जैसे कुछ वर्ष पहले हाथ-करघा अुन्हें अच्छा नहीं लगता था, परन्तु श्री राजाजीके प्रचण्ड प्रचारके कारण अुसका महत्त्व अुनकी समझमें आया था, अुसी तरह अुससे आगेकी और अुसीसे अुत्पन्न होनेवाली करघेकी वातका कड़वा घूंट भी वे पी लेंगे। परन्तु आज तो अैसा लगता है कि वह कड़वा घूंट पीनेमें अुन्हें मतली आती है। और अिसी कारण अुनका विभाग अैसा मानकर चलता है मानो चरखा हाथ-करघेके खिलाफ़ हो, तथा कानूनगो-समितिकी सिफारिशोंको आगे बढ़ाना और कर्वे-समितिकी सिफारिशोंको पीछे रखना या अुनकी अुपेक्षा करना चाहता है।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि यह विचित्र बात है। सच पूछा जाय तो अुसे यह समझना चाहिये कि कानूनगो-समितिने जो अपेक्षा रखी थी कि खादी और चरखेका विचार दूसरी समितिको करना चाहिये वह अपेक्षा अब कर्वे-समितिने पूरी की है। अिससे अुसे खुश होना चाहिये। परन्तु आज तो अैसा दिखाअी देता है मानो अिन दो समितियोंकी रिपोर्टें अुसके मनमें अेक-दूसरेसे लड़ रही हों।

कानूनगो-समितिकी रिपोर्टको यदि यंत्रोद्योगवादी या यंत्र-करघा-रिपोर्टका नाम दें, तो कर्वे-समितिकी रिपोर्टको ग्रामोद्योगवादी या अम्बर-चरखा-रिपोर्ट नाम दिया जा सकता है। वस्तुतः अिन दोनोंमें कोअी विरोध नहीं होना चाहिये; बल्कि दोनों अेक-दूसरेकी पूरक होनी चाहिये। और अैसी ही नीति सरकारने और अुसके योजना-कमीशनने स्वीकार की है। अिस चीजको समझे बिना यदि भारतका अुद्योग-विभाग चलेगा तो कहा जायगा कि वह अपने कर्तव्यको भूलकर गलत रास्ते जा रहा है।

भारतकी आर्थिक प्रगतिकी दिशा पश्चिमका अंधा होते हुअे भी ज्ञानके घमंडसे भरा हुआ अनुकरण करनेमें नहीं, बल्कि जगतमें शांति-परायण, मानवतापूर्ण तथा सर्वोदयी अर्थ-व्यवस्था कौनसी है यह खोजकर अुस मार्ग पर चलनेमें छिपी हुअी है। श्री कृष्ण-माचारी आश्रमों और 'पुरानी रीतियों' वाला कह कर जिसकी हंसी अुड़ाते हैं, वह वास्तवमें यह समझकर चलनेवाला आर्ष विचारमंडल है कि जगतके कल्याणकी अैसी दिशा भविष्यके गर्भमें है। यह सच है कि पश्चिमकी घातक यंत्रोद्योगी दिशाका अन्धकार अुसकी दृष्टिमें नहीं पैठा है।

अिसलिअे केन्द्रीय सरकारका अुद्योग-विभाग चरखेको ज्यादा अच्छा यंत्र बनानेके प्रयत्नका स्वागत करे और भारतके कपड़ा-अुद्योगमें अम्बर चरखे जैसे औजारको दाखिल करनेके शुभ आरंभकी कदर करे तो अच्छा होगा। अुसके बिना देशकी बेकारी दूर करनेमें सफलता नहीं मिलेगी, यह अब तो अुसकी समझमें आ जाना चाहिये। और यंत्रोद्योग चलानेवाले भी अिसे समझ लें तो अुनका भी कल्याण ही होगा।

९-१२-'५५ **मगनभाई देसाई**
(गुजरातीसे)

भावी भारतकी अेक तसवीर
[दूसरी आवृत्ति]
किशोरलाल मशरूवाला
कीमत १-०-० डाकखर्च ०-५-०

ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम
[तीसरी आवृत्ति]
लेखक: **जुगतराम दवे**; अनु० **रामनारायण चौधरी**
कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०
नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४
www.vinoba.in

पश्चिमकी स्वतंत्रताका खोखलापन

[सन् १९१२ में अूपरके शीर्षकसे गांधीजीने यह लेख लिखा था, जिसे श्री छगनलाल जोशीने मेहनत अुठाकर 'अिन्डियन ओपीनियन' में से खोजकर मेरे पास भेजा है। आज भारत जहां है, वहां अुसे थोड़ी देर ठहरकर अिस लेखमें कही गअी बातोंको समझनेका प्रयत्न करना चाहिये। और क्या सारी दुनियाके समझने जैसी बातें अिसमें नहीं हैं? सवाल केन्द्रित यंत्रोद्योगोंवाली संस्कृति बनाम विकेन्द्रित ग्रामोद्योगों पर आधारित जीवनका है। यह सवाल धीरे धीरे सारी दुनियाका बनता जा रहा है। परंतु भारतमें हम अभी तक युरोपके स्याहीसोखकी तरह ही काम कर रहे हैं। — म० प्र०]

हम भारतीय, जो अपने देशकी राजनीतिक स्वतंत्रता खो बैठे हैं, बहुत बार राजनीतिक स्वतंत्रताको असाधारण महत्त्व दे देते हैं। और कभी कभी अैसा भी मान लेते हैं कि देशके लोगोंकी सुख-शान्ति और अस्तित्वका आधार केवल राजनीतिक स्वतंत्रता पर ही होता है। सच पूछा जाय तो स्थिति अिससे बिलकुल अुलटी है। किसी देशकी सुख-शांतिका और अुसके अस्तित्वका आधार अुसकी राजनीतिक स्वतंत्रता पर नहीं, बल्कि वहांके अुद्योग-धंधों संबंधी तथा सांसारिक नियमों पर होता है। अितना ही नहीं, अगर ये नियम मजबूत और सीधे न हों — सच्ची सभ्यताके आधार पर न रचे गये हों, तो अकेली राजनीतिक स्वतंत्रता देशको तबाही, भुखमरी और विनाशके रास्ते जानेसे बचानेमें बिलकुल असमर्थ है। दूसरे शब्दोंमें कहें तो अुद्योग-धंधोंके तथा सांसारिक नियम कमजोर और अुलटे हों — झूठी और अस्थायी सभ्यता पर रचे हुअे हों — तो प्रजाकी सुख-शांति और अुसके अस्तित्वकी दृष्टिसे राजनीतिक स्वतंत्रता या प्रजातंत्र (डेमोक्रसी) अुपयोगी नहीं होता। ये नियम मजबूत न हों तो देशका काम चलानेके लिअे स्वतंत्रताका साधन बिलकुल कमजोर साबित होता है।

आजकल (मार्च १९१२) अिंग्लैण्डमें जो कुछ हो रहा है अुस परसे यह बात अच्छी तरह सिद्ध हो जाती है। वहां मजदूर-वर्गका अेक हिस्सा किसी कारणसे कुछ दिनके लिअे काम बन्द कर देता है तो अुसका क्या परिणाम आता है? अेक हफ्तेके भीतर देशका सारा मजदूर-वर्ग बिना रोजगार-धंधेका हो जाता है। आधी आबादी भुखमरीका शिकार हो जाती है और सारी जनता रोजाना जिन्दगीकी जरूरतोंकी अनेक चीजोंके बिना लाचार बन जाती है। जनसमाजकी अिमारत देखते-देखते जमीनदोस्त होनेकी स्थिति पर पहुंच जाती है, मानो क्षणभरमें किसी जादुअी ताकतसे अुसकी नींव खोद डाली गअी हो। बड़े बड़े राजनीतिज्ञोंकी बुद्धि भी अिस दशाको रोकनेमें अशक्त होती है। राजनीतिक स्वतंत्रता तथा जनताकी सत्ता — अधिकार — का नमूना सारा राज्यतंत्र अिस भयंकर परिणामको रोकनेमें थोड़ा भी समर्थ नहीं होता। नये देशोंकी ख[illegible]या [illegible]भिमान माननेवाली, शास्त्र (सायन्स) की आश्चर्य-जनक शोधोंमें [illegible]नहीं [illegible]ली, हवाअी जहाज द्वारा आकाशका राज्य अपने अधिकारम[illegible] चतुराअी समझनेवाली किसी भी बुद्धिमें, किसी भी दिमागमें, कि[illegible] मनुष्यमें सारी जनताके भूखसे होनेवाले विनाशको रोकनेकी तिलमात्र भी ताकत नहीं है। राज-नीतिक स्वतंत्रता और पाश्चात्य सभ्यताके केन्द्र माने जानेवाले भाअीबन्द राज्य भी अपने शिरोमणिरूप अिंग्लैण्डको अुसकी मौत जैसी भयंकर आफतसे बचानेमें थोड़ी भी मदद नहीं कर सकते। करें भी कैसे? अुनके अपने नियम भी अिंग्लैण्डकी तरह अुलटे और गलत बुनियाद पर रचे हुअे हैं। वे मदद देनेके बजाय जिस प्रवाहमें अिंग्लैण्ड बह रहा है अुसीमें स्वयं कम-अधिक मात्रामें बहने लगे हैं। पाठको, अैसी संपूर्ण सभ्य दुनियाको आश्चर्यमें डुबा देनेवाला

परिणाम मजदूरोंके अेक हिस्सेके थोड़े समय तक काम बन्द कर देनेके फलस्वरूप आता है! यह साधारण घटना हमें क्या शिक्षा देती है? यह शिक्षा वही है, जो अूपर बताअी गअी है। वह यह कि देशकी प्रजाकी सुख-शांति और अुसके जिन्दा रहनेके लिअे अुद्योग-धंधों संबंधी तथा सांसारिक नियम अुत्तम होने चाहिये। यह प्रत्येक देशकी मुख्य आवश्यकता है। अैसे नियम न हों तो राजनीतिक स्वतंत्रता, लोकशाही और विज्ञानकी खोजें करनेवाली बुद्धि लोगोंके कल्याणके लिअे और जिन्दा रहनेके लिअे बिलकुल बेकार है। बेशक, जो लोग अपार बुद्धिमत्तासे की गअी भारतके मूल नियमोंकी रचनाको न समझकर बिना सोचे-विचारे भारतमें जगह जगह यंत्र और कारखाने दाखिल करनेमें अुस प्राचीन भूमिकी अुन्नति समझते हैं, वे अिंग्लैण्डकी अिस हड़तालसे जरूर सबक लेंगे। अिसके सिवा, जो लोग अिंग्लैण्डको अथवा पश्चिमके देशोंको वहांकी राजनीतिक स्वतंत्रताके कारण सब प्रकारके सुखके धाम मानते हैं, वे भी अिस बातको समझेंगे कि प्रजाके थोड़े लोगोंको दौलतमंद बनानेका नहीं बल्कि समस्त प्रजाको सुखी बनानेका हमारा लक्ष्य हो, तो राजनीतिक सत्ता या स्वतंत्रताके बजाय देशके अुद्योग-धंधों संबंधी और सांसारिक नियम सच्ची सभ्यताकी नींव पर रचे हुअे होने चाहिये। दूसरे शब्दोंमें कहें तो जहांकी सभ्यता ही विनाशकारी है, वहां और किसी अुपायसे शांति या जीवनकी रक्षा नहीं की जा सकती। जहांकी सभ्यता अुत्तम प्रकारकी है — और सदा अुसकी अुत्तमताकी रक्षा की जाती है — वहां राजनीतिक परतंत्रता भी देश तथा प्रजाकी सुख-शांति और जीवनको टिकाये रखनेमें रुकावट नहीं डाल सकती।

१९१२ **मो० क० गांधी**
(गुजरातीसे)

शिक्षाकी नअी और पुरानी पद्धति

बुनियादी शिक्षाका मूलबिन्दु यह है कि अुसका माध्यम पाठ्य-पुस्तकें और भाषा नहीं, बल्कि अुत्पादक श्रम और जीवनोपयोगी अुद्योग है। केवल पाठ्यपुस्तकों पर निर्भर रहनेवाली अंग्रेजी शिक्षाके हिमायती वर्ग अिस बातका रहस्य अभी तक समझे नहीं हैं। विविध विषयोंकी जानकारी, अुसे अच्छी तरह प्रस्तुत करनेवाली लेखनकला, चर्चा और वाद-विवाद द्वारा अुसका भलीभांति निरूपण करनेकी योग्यता — यह सब अंग्रेजी शिक्षा-पद्धतिका केन्द्र-बिन्दु माना गया। अिसके फलस्वरूप पाठ्यपुस्तकोंका साधन बहुत बड़ा और लगभग अेकमात्र साधन बन गया। विदेशी शासन-तंत्रको चलानेके लिअे, अुसके दफ्तरोंमें काम करनेके लिअे अुपरोक्त शिक्षा बहुत अुपयोगी थी। अिसलिअे पिछले लगभग १०० वर्षोंमें शिक्षाका जो चौखटा तैयार हुआ, वह अिन ध्येयोंको सामने रख कर चला और अुसीमें अुसकी अितिश्री अथवा कृतकृत्यता मानी गअी। अैसी स्थितिमें यह स्पष्ट है कि अुद्योग द्वारा शिक्षाकी बात समझमें नहीं आ सकती। और यदि समझमें भी आये तो अितनी ही कि वह अेक प्रकारकी 'टेकनिकल' अुद्योग-शिक्षा है। अिसलिअे प्रचलित शिक्षण-पद्धतिमें यदि अुद्योगका थोड़ा तत्त्व दाखिल किया जा सके तो बस है; अैसा मानकर और अितना करके पाठ्यपुस्तकों द्वारा शिक्षाकी पुरानी पद्धति जारी रखी जाती है। बुनियादी शिक्षा और प्रचलित शिक्षामें अगर कोअी बड़ा और मुख्य फर्क या दृष्टिभेद हो तो यह है कि बुनियादी शिक्षा बालकके विकसित हो रहे आतुर जीवनमें प्रवृत्ति या अुद्योग द्वारा काम करना चाहती है, जब कि पुरानी शिक्षा पाठ्यपुस्तकों और लेखन द्वारा अपना काम जारी रखना ठीक समझती है। अिसीलिअे पहलीको शिक्षाकी जीवन-पद्धति या अुद्यम-पद्धति और दूसरीको अक्षर-पद्धति कहना चाहिये। यह बहुत बड़ा फर्क है। अुद्यम-पद्धति या जीवन-पद्धति सर्व व्यापक है। अुसके द्वारा सार्वत्रिक शिक्षाकी कल्पना की जा सकती है और अुसे संभव बनाया जा सकता है। परन्तु अक्षर-पद्धतिके जरिये कुछ खास वर्ग ही तैयार किये जा सकते हैं। सब कोअी अुसमें अेकसा भाग नहीं ले सकते। यही वजह है कि अिस पद्धतिके भारतमें दाखिल होने पर पढ़नेवाले वर्गोंकी संख्या दस प्रतिशत ही रह गअी। बाकी लोगोंको अगर शिक्षा नामकी कोअी चीज मिली हो तो वह अुनके अपने अुद्यम-जीवनसे ही थोड़ी-बहुत मिल सकी।

अुद्यम-पद्धति अक्षर-पद्धति जैसी अेकांगी नहीं है। अक्षर-पद्धतिने अुद्यमको अैसा छोड़ दिया कि श्रम और अुद्योग समाजमें हलके माने जाने लगे। अुद्यम-पद्धति अक्षरज्ञानकी अैसी अुपेक्षा नहीं करती, परन्तु अुसकी मर्यादा समझकर काम करती है और अपने भीतर अुसका स्थान मानकर ही चलती है। समाजमें जो कुछ जीवनक्रम और अुद्यम चलता है अुसमें भाग लेना चाहिये और समझकर लेना चाहिये। अिसके लिअे अुद्यम-जीवनके अनुबन्धमें जिन जिन विषयोंका ज्ञान आवश्यक हो वह मिलता रहना चाहिये। अिस तरह अुसमें अक्षर-पद्धतिका समावेश हो जायगा। अुस हद तक पाठ्यपुस्तकोंका भी अुसमें स्थान होगा। परन्तु केवल पाठ्य-पुस्तकें ही नहीं रहेंगी, क्योंकि पाठ्यपुस्तक ज्ञान नहीं है। ज्ञान तो जीवनको समझनेके प्रयत्नमें छिपा होता है। अिसलिअे जीवनसे प्रत्यक्ष सम्बन्ध कायम किये बिना शिक्षाकी प्रक्रिया नहीं चल सकती। बुनियादी शिक्षा अिस वस्तुको पकड़कर आगे बढ़ती है। अिसलिअे वह जीवनका अिनकार नहीं करती, अथवा विद्यार्थीके जीवनका अर्थ केवल पुस्तकें पढ़ना और अूंचे नम्बरसे पास होना ही नहीं करती। अक्षर-पद्धतिकी शिक्षाका यही अर्थ हो रहा है।

शिक्षामें यह भेद भारी सामाजिक क्रान्ति करनेवाला है। अुसके सिद्धान्तको अपनाकर यदि शिक्षाकी पुनर्रचना हो, तो ही भारतमें जो सर्वोदयी समाज हम कायम करना चाहते हैं, अुसका स्वरूप समाज पकड़ने लगेगा। अैसा हो तो अनिवार्य सार्वत्रिक शिक्षा अवश्य स्वावलंबी बनेगी, क्योंकि वह समाजके सच्चे जीवनके साथ जुड़ी हुअी होगी; आजकी तरह अूपरसे लादी हुअी नहीं होगी।

६-११-'५५ **मगनभाई देसाई**
(गुजरातीसे)

कृषि और अुद्योग पर आधारित समाजका आदर्श

अुड़ीसाके प्रमुख नेताओंने, जिनमें कांग्रेसजन और प्रजा-समाजवादी दोनों थे, अुड़ीसा-यात्रामें विनोबाजीके साथ अेक घंटेका समय बिताकर देशकी भूमि-समस्याको सामने रखते हुअे भूदान-यज्ञकी चर्चा की। अिस दलमें राज्यके कुछ मंत्री भी थे। वह हार्दिक बातचीत थी, जिसमें मुलाकातियोंने अपनी कुछ शंकायें पेश कीं और अुन पर विनोबाका स्पष्टीकरण चाहा।

अुनका पहला प्रश्न था: "आप सबके लिअे जमीन चाहते हैं। लेकिन हमारे देशमें जमीनकी कमी है। अैसी हालतमें हरअेकको आर्थिक दृष्टिसे लाभकारी जमीन कैसे दी जा सकती है?"

विनोबाने अुत्तर दिया: "यह शंका पहले-पहल आजसे ३॥-४ साल पहले अुठायी गयी थी। आज तो योजना-कमीशन भी बेजमीनोंको जमीन देनेकी आवश्यकताको स्वीकार करता है। हमारे देशमें अेक व्यक्तिके लिअे अेक अेकड़ जमीन काफी मानी जाती है। अिस तरह पांच आदमियोंके अेक परिवारके लिअे लगभग पांच अेकड़ जमीनकी आवश्यकता है। अब हमारे देशमें कुल ४८० लाख बेजमीन लोग हैं। अिसलिअे हमें लगभग ५ करोड़ अेकड़ जमीन चाहिये। अगर जमीन खराब हो तो अिससे ज्यादाकी जरूरत होगी और अगर बहुत अच्छी हो तो अिससे कम जमीनमें भी हमारा काम चल जायगा।"

विनोबाने आगे कहा: "भारतमें लगभग ३० करोड़ अेकड़ अच्छी जमीन है। और करीब १० करोड़ अेकड़ पड़ती जमीन है।

www.vinoba.in

अगर हमें अच्छी जमीनका छठा भाग मिल जाय तो फिलहाल हमारे देशकी भूमिसमस्या हल हो जायगी।"

"क्या आप मानते हैं कि यह समस्याका स्थायी हल होगा?"

"बिलकुल नहीं। अिस समस्याको स्थायी रूपसे हल करनेके लिअे आपको भारतमें तीन बातें करनी होंगी: (१) जमीनका फिरसे बंटवारा करना, (२) सिंचाअीकी व्यवस्था करना और (३) सहायक ग्रामोद्योगोंका विकास करना। गांवके कच्चे मालका तैयार माल गांवमें ही बनना चाहिये। अिस त्रिविध कार्यक्रम पर अमल किये बिना गांवोंको समृद्ध और खुशहाल बनाना असंभव होगा।"

अैसा लगा कि अिस अुत्तरसे अुन्हें संतोष हो गया। लेकिन वे अिस बातको पूरी तरह नहीं समझ सके कि विनोबा सबके लिअे जमीन क्यों चाहते हैं। अिसलिअे अुनमें से अेक भाअीने आगे आकर अेक बड़ा व्यावहारिक प्रश्न पूछा: "आपके अिस सिद्धान्तके पीछे क्या विचार है कि जमीन सबको दी जानी चाहिये?"

"हां, यह अेक बड़ी बुनियादी वस्तु है जो मैंने देशके सामने रखी है। मेरा यह दावा है कि जमीन पर प्रत्येक मानवका जन्म-सिद्ध अधिकार है। मेरा विश्वास है कि धरतीमाताकी सेवा करनेका हरअेकको मौका मिलना चाहिये। जिस तरह प्यासेके लिअे पानीकी जरूरत होती है, अुसी तरह खेती सबके लिअे जरूरी है। कोअी किसीसे यह कहनेकी हिम्मत नहीं कर सकता कि तुम्हें जमीन नहीं दी जायगी और तुम्हें खानोंमें काम करना पड़ेगा। जमीन पर हर आदमीका अधिकार है। हां, जो लोग खेती-काम करनेसे अिनकार करेंगे अुन्हें जमीन नहीं दी जायगी।"

"कुछ लोगोंको जमीन देनेका और दूसरोंको मिलों और कारखानोंमें काम देनेका विचार आपको कैसा लगता है?"

"सच है", विनोबाने मुसकरा कर कहा, "आप आज मुझे अपनी जमीनसे वंचित रखेंगे और भविष्यमें न जाने किस वक्त मुझे काम देंगे। अिसका मतलब हुआ जमामें बेजमीन होना और अुधारमें काम पाना! अगर मुझे कोअी काम देना है तो वह आज ही और मेरे गांवमें ही दिया जाना चाहिये। ग्रामोद्योगोंकी हर तरहसे रक्षा करनी होगी।"

विनोबाने आगे कहा: "सबके लिअे जमीनके मेरे दावेके पीछे यह विश्वास है कि जमीनकी मालकियतका विचार ही गलत है। मैं रोज रोज लोगोंसे कहता रहता हूं कि हवा और पानीकी तरह, आकाश या धूपकी तरह जमीन पर भी किसीकी व्यक्तिगत मालकियत नहीं हो सकती। अुस पर अीश्वरका ही अधिकार हो सकता है और अिस तरह सारे गांवका अधिकार हो सकता है। हरअेकको काम करनेके लिअे जमीन मिलनी चाहिये। लोग व्यक्तिगत खेती करते हैं या सहकारी खेती करते हैं, अिसकी मुझे बहुत परवाह नहीं है। लेकिन सहकारी खेती लोगों पर लादी नहीं जानी चाहिये। आप यह तो मानेंगे कि सहकारी खेती सामूहिक ढंगकी खेती नहीं है। बिहारके छपरा जिलेमें (जहां प्रति वर्गमील अेक हजारकी आबादी है) लोगोंको जमीनके छोटे छोटे टुकड़ों पर भी मैंने बहुत अच्छी फसलें पैदा करते देखा है।"

"क्या आपका यह मतलब है कि हमें छोटे पैमानेकी खेतीको प्रोत्साहन देना चाहिये?"

विनोबाने यह कह कर अुन्हें चुप कर दिया: "मुझे लगता है कि आपको छोटे पैमानेकी खेतीका विज्ञान बढ़ाना होगा। दुनियाकी आबादीमें बढ़ती होने पर प्रति मनुष्य जमीनकी मात्रामें अवश्य कमी होगी। जापानमें, जहांकी जमीन पर हमारे देशसे दोहरा बोझ है, लोग जमीनके अुतने ही बड़े टुकड़े पर हमारे यहांसे दुगुनी फसल पैदा करते हैं। अिस दिशामें वे हमसे बहुत आगे बढ़ गये हैं। मेरा यह भी विश्वास है कि समय बीतने पर सारी दुनियाके लोगोंको मांसाहार छोड़कर शाकाहार पर आना पड़ेगा, क्योंकि वैज्ञानिक स्वयं यह कहते हैं कि मांसाहारके लिअे प्रति मनुष्य दो अेकड़ जमीन चाहिये, जब कि शाकाहारके लिअे प्रति मनुष्य आधा अेकड़ जमीन काफी होगी।

"अिस तरह हमारी अर्थरचनाके सुखद विकासके लिअे हमें नीचेकी बातों पर जोर देना होगा: (१) जमीनके छोटे टुकड़ोंसे अधिक अनाज पैदा करनेके लिअे वैज्ञानिक योजना, (२) सिंचाअीकी अच्छी सुविधायें, (३) सहायक ग्रामोद्योगोंकी व्यवस्था, (४) गांवके कच्चे मालका गांवमें ही तैयार मालमें रूपान्तर और (५) जमीन पर सबके जन्मसिद्ध अधिकारकी स्वीकृति। यह आसानीसे समझा जा सकता है कि आगे चलकर हमें फावड़ेकी खेती पर भी ध्यान केन्द्रित करना होगा। पवनारमें मैंने तरह तरहकी खेतीका प्रयोग किया है, जैसे फावड़ेके जरिये, बैलोंके जरिये और अेंजिनके जरिये।"

कुछ समय तक शांति रही। फिर मुलाकातियोंके चेहरोंकी तरफ देखते हुअे विनोबाने कहा: "आपके प्रश्नोंका अुत्तर देनेमें मुझे खुशी होगी। मैं चाहता हूं कि आप बिना किसी संकोचके अपनी शंकायें या प्रश्न मेरे सामने रखें।"

अिससे प्रोत्साहित होकर अेक विचारमग्न मालूम होनेवाले कार्यकर्ताने पूछा: "अगर सारी जमीन पर गांवका अधिकार रहेगा, तो घरके बिलकुल पासकी जमीनका क्या अुपयोग किया जायगा?"

विनोबाने कहा: "मैं तो चाहता हूं कि हर घरके आसपास लगभग आधा अेकड़ जमीन रहे जिसमें शाकभाजीका बगीचा लगाया जाय। लेकिन आजकल आर्थिक दृष्टिसे लाभप्रद जमीनके नाम पर लोग अुत्तरप्रदेश, बिहार और बंगालमें भी बड़े बड़े फार्मों पर खेती करने लगे हैं। शक्करकी मिलोंके पास अपने स्वावलंबी फार्म हैं। पहले हमारे यहां हिन्दू-मुसलमानोंके दंगे होते थे, अब अनाज बनाम गन्नेके दंगे हो सकते हैं। अुदाहरणके लिअे, गोरखपुर जिलेमें आबादी बहुत घनी है और जमीन कम है। फिर भी वहां शक्करकी मिलोंके साथ बड़े बड़े फार्म जुड़े हुअे हैं। वहां अनाजकी निश्चित तंगी है। मेरा यह कहना नहीं है कि आप शक्कर न पैदा करें। लेकिन मैं बुद्धिपूर्वक बनाअी गअी योजनाकी, बारी बारीसे अनाज और गन्ना पैदा करनेकी योजनाकी बात जरूर कहता हूं।

"अिस संबंधमें अेक दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमारे गांवोंमें लगभग सारा खाद बरबाद हो जाता है। कहा जाता है कि अेक आदमीके मैलेकी वार्षिक कीमत करीब ६ रुपये होती है। अिस मैलेका बिलकुल अुपयोग नहीं किया जाता। अगर अिसका ठीक ढंगसे अुपयोग हो तो जमीनकी शक्ति खूब बढ़ेगी और गांव समृद्ध बनेंगे।"

अेक दूसरे शक्तिशाली कार्यकर्ताने पूछा: "यद्यपि सरकार पूरे दिलसे आपके साथ सहमत नहीं होती, फिर भी कमसे कम हमारे राज्यमें सरकार भूदान कार्यकर्ताओंकी मदद करती है। अिसकी लोगों पर यह छाप पड़ती है कि सरकार आपके कामका समर्थन करती है। क्या अिससे भूदान-यज्ञ लोगोंमें आवश्यक जागृति पैदा करनेमें असफल नहीं रहेगा? अैसी हालतमें क्रान्ति कैसे हो सकेगी?"

अिस प्रश्नसे खुश होकर विनोबाने कहा: "आप जानते हैं कि अेक बहुत महत्त्वपूर्ण विशेषण अुस क्रांतिके साथ जुड़ा हुआ है जो हम करना चाहते हैं। वह विशेषण है 'अहिंसक'। हमारी क्रांति अहिंसक होगी। यह अेक अैसा शब्द है जो सारी भूमिकाको बदल देता है। यह विरोधीके विचारका ही निषेध करता है। हमारा कोअी शत्रु नहीं। आज जो लोग जमीनका दान नहीं देते वे कल देंगे। आज जो लोग हमारे साथ नहीं हैं, वे कल हमारे साथ हो जायंगे। किसीको हमारा शत्रु मानना या किसीके बारेमें अपने मनमें कोअी शंका रखना बेकार है। जो लोग कल तक

www.vinoba.in

हमारे मित्र थे अुन्हें हम आज अपने शत्रु मानने लगें तो अिससे शत्रुता पैदा होगी। अुपनिषद् कहते हैं: 'तू ब्रह्म है'। लेकिन अगर हम मानें कि 'तू पापी है' तो हमारे आसपास हमें पापी ही पापी दिखाअी देंगे। अिसलिअे सरकारकी सेवा स्वीकार करनेमें कोअी नुकसान नहीं है। लेकिन अिस बातकी सावधानी रखनी चाहिये कि हम अपनी सेवामें सरकारके दमनकारी तत्त्व दाखिल न होने दें।

"अिसके सिवा, अब कांग्रेसने समाजवादी समाज-व्यवस्थाकी स्थापनाको अपना ध्येय घोषित किया है, लेकिन वह तब तक सिद्ध नहीं होगा जब तक गांवकी जमीन पर गांवका ही अधिकार नहीं होगा। मेरा आधार जनशक्ति पर है। आप कह सकते हैं कि कांग्रेसके और मेरे बीचका भेद घट रहा है। लेकिन यह भेद तो हमेशा कायम ही रहेगा। क्योंकि हम सदा कांग्रेससे आगे रहते हैं। मुझे विश्वास है कि आप भी यह स्वीकार करेंगे कि अगर लोगोंकी शक्ति और सरकारकी शक्ति अेक हो जाय (जो बहुत आसान नहीं है), तो देशके हितमें वह अच्छा ही होगा।

"अब प्रजा-समाजवादी पार्टीको देखिये। वे जमीनके सामाजिक अधिकारमें विश्वास रखते हैं। वे कहते हैं कि मैंने अुनका कार्यक्रम अुठा लिया है। मैं अिसे स्वीकार करता हूं। लेकिन मेरा अुनसे पूछना है कि अुन्होंने अिस कार्यक्रमको क्या अिसीलिअे छोड़ दिया कि मैंने अुसे अुठा लिया है। मुझे अिस विषयमें कुछ शंका नहीं है कि अगर प्रजा-समाजवादी पार्टीकी, कांग्रेसकी और सरकारकी अदमनकारी शक्तियां अिस कामके लिअे मिलकर अेक हो जायं तो बेजमीनोंकी समस्या छः महीनेके भीतर हल हो जायगी।"

"लेकिन जब ३६ लाख अेकड़ जमीन अिकट्ठी करनेमें आपको तीन साल लगे हैं, तब पांच करोड़ अेकड़का लक्ष्य सिद्ध करनेमें कितना समय लगेगा?"

"यह प्रश्न आप किसी तीसरे या चौथे दर्जेमें पढ़नेवाले विद्यार्थियोंसे पूछें तो ज्यादा अच्छा हो। लेकिन हम सब तो कॉलेजके दर्जे पर पहुंच गये हैं, जहां हम अैसी समस्याओंका विचार नहीं करते", विनोबाने मुसकराते हुअे कहा। अिससे सब लोग खिलखिला अुठे।

विनोबाने आगे कहा: "आप देख सकते हैं कि अेक लाख अेकड़ जमीन अेक सालमें मिली थी और ३६ लाख अेकड़ तीन सालमें। अतः अिस तरहके प्रश्नका अुत्तर देनेके लिअे आपको अूंचे गणित — अिंटेग्रल केल्क्युलस — के आधार पर विचार करना होगा।"

"अगर कुछ लोग आपका जोरदार विरोध करें और जमीन देनेसे अिनकार करें, तो आप किस तरह काम करनेकी सलाह देंगे?"

"हमें कड़ी जमीन खोदनेके लिअे मजबूत औजारोंकी जरूरत होती है। मेरा तरीका है लोकमतकी हवा पैदा करनेका। जब तेज हवा चलती है, तब न केवल पक्षी बल्कि पत्ते भी हिलते हैं और आकाशमें अुड़ते हैं। अुसी तरह जब हर बच्चा कहेगा कि हमारे देशमें कोअी बेजमीन नहीं रहेगा, तब सचमुच अैसी स्थिति अुत्पन्न हो जायगी। मंत्रमें अपार शक्तियां होती हैं। हम सब 'भारत छोड़ो' मंत्रका जादू तो जानते ही हैं।"

"क्या दूसरे शब्दोंमें आप नया कानून बनानेकी हिमायत नहीं करते?" यह अुनका अंतिम प्रश्न था।

विनोबाने अुत्तर दिया: "लोकतंत्रको अपना अेक खास कार्य करना होता है। कानून अुसका अधिकार और जिम्मेदारी दोनों है। लेकिन अगर कोअी कानून बनाना हो तो वह अैसा नहीं होना चाहिये जो खुद सरकारको ही मूर्ख बनावे। जमीनकी अूंचीसे अूंची मर्यादा ३० या ४० अेकड़ तय करनेवाला कोअी कानून लाभदायक साबित नहीं होगा। अुससे 'जैसे थे' की स्थिति ही बनी रहेगी। जब मैं बिहारमें था तब अेक बड़े जिलेके मजिस्ट्रेटसे मिलनेका मुझे मौका आया। अुन्होंने मुझसे कहा कि जब सरकारने अुनसे ३० अेकड़से अूपर जमीन रखनेवाले जमींदारोंकी सूची पेश करनेके लिअे कहा तो अुन्होंने अैसी सूची तैयार की, लेकिन अुन्हें मुश्किलसे ३० नाम अिस श्रेणीमें मिले। यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने अुनसे पूछा कि अैसा क्यों हुआ। तब अुन्होंने कहा कि जमींदारोंने सारी जमीन अपने परिवारके सदस्योंमें बांट दी थी।

"या पश्चिम बंगालको ही लीजिये, जहां मैं हाल ही होकर आया हूं। कहा जाता है कि प्रस्तावित कानूनके मातहत वहांकी लगभग १२५ लाख अेकड़ जमीनमें से ४ लाख अेकड़ भी मुश्किलसे सरकारके हाथमें आयेगी; और अगर २ लाख अेकड़ जमीन भी मिल गअी तो सरकारको संतोष हो जायगा। अिस तरह कानून बनानेकी सारी मेहनतके बाद १२५ लाखमें से केवल २ लाख अेकड़ जमीन आपके हाथमें आती है! और वह भी रद्दीसे रद्दी जमीन होगी। फिर, अुसका अमल मअी १९५३ से शुरू हुआ माना जायगा। अब अुसे क्या कहा जाय — कानून या अुसका दबाव? अिसके सिवा, सरकार कहती है कि अिस तरह मिलनेवाली जमीन वह खुद बांटेगी। वह बेजमीनोंको जमीन नहीं देगी, जैसा कि हम भूदानमें करते हैं। अुसका विचार ५ अेकड़की आर्थिक अिकाअियां बनानेका है। दूसरे शब्दोंमें वह सबसे पहले आधा अेकड़ अुन लोगोंको देगी जिनके पास ४½ अेकड़ पहलेसे मौजूद हैं। फिर १ अेकड़ अुन्हें देगी जिनके पास ४ अेकड़ हैं। अिसी तरह वह आगे बढ़ेगी। अिस प्रक्रियामें बेजमीनके हाथमें तो अेक अेकड़ जमीन भी मुश्किलसे पहुंचेगी। अैसे कानूनका क्या अुपयोग है? अेकमात्र अुपयोगी कानून यह है कि सारी जमीन पर गांवका अधिकार हो।"

अिस परसे दूसरा स्वाभाविक प्रश्न यह आया:

"लेकिन आपके कहे अनुसार कानून बन जाय तो क्या लोगों द्वारा अुसे स्वीकार करानेके लिअे शक्ति या दबावका अुपयोग नहीं करना पड़ेगा?"

"नहीं करना पड़ेगा। दबावका प्रश्न तभी खड़ा होता है, जब आप राज्यकी सशस्त्र शक्तिका अुपयोग करते हैं। बेशक वैसा करना गलत होगा। दूसरी तरफ अगर आप जाग्रत लोकमतके आधार पर कोअी कानून बनाते हैं तो अुसमें दबावका प्रश्न कहां रह जाता है? लेकिन जैसा कि मैं दिखा चुका हूं, जमीनकी अूंचीसे अूंची मर्यादा बांधनेवाला कानून किसीकी मदद नहीं करता।"

अब अेक घंटेका समय हो चुका था। नेताओंने विनोबाको अुनकी बोधप्रद बातचीतके लिअे धन्यवाद दिया। अुन्होंने विनोबाके अुड़ीसा प्रवास-कालमें फिरसे मिलनेका वचन दिया। अुठते-अुठते अुनमें से अेक मंत्रीने कहा: "मेरे खयालमें हमारे देशकी राजनीतिक पार्टियां आम जनतासे नहीं बल्कि मध्यमवर्गसे डरती हैं।"

"बिलकुल अैसा ही है, क्योंकि मध्यमवर्ग शोरगुल मचानेकी शक्ति रखता है", विनोबाने अंतमें कहा, और दोनों हाथ जोड़ कर अुनसे बिदा ली।

(अंग्रेजीसे)

सुरेश रामभाअी

विषय-सूची

		पृष्ठ
मनुष्य और मशीन	जवाहरलाल नेहरू	३२९
अम्बर चरखा	मगनभाई देसाई	३२९
अम्बर चरखेका अर्थशास्त्र		३३०
भाषाओंमें मां-मौसीका न्याय	लालभाअी र० देसाअी	३३१
करघा बनाम चरखा!	मगनभाई देसाई	३३२
पश्चिमकी स्वतंत्रताका खोखलापन	गांधीजी	३३३
शिक्षाकी नअी और पुरानी पद्धति	मगनभाई देसाई	३३४
कृषि और अुद्योग पर आधारित समाजका आदर्श	सुरेश रामभाअी	३३४

www.vinoba.in